आदर्श बनाना क्या सही है?

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

आप आगे बढ़ना चाहते हैं, जीवन उन्नति का नाम है और उन्नति के शिखर पर चढ़ने हेतु जिन पायदानों का आप इस्तेमाल करते हैं, उनमें एक पायदान आपका अपना आदर्श भी होता है। आदर्श रूपी पायदान का उपयोग सही है या गलत, थोड़ा इस पर सोचते हैं...

जब भी किसी को हम अपने सामने आइने के रूप में रखते हैं, और बीच बीच में उसमें अपने को देखते भी हैं कि क्या हम सही हैं या नहीं! आप सोचिए, हर एक व्यक्ति अपने आप में विशेष है या यूनीक है, है या नहीं! है ना!

उसकी अपनी खूबी आपको अपनी ओर या कहें उसकी तरफ आकर्षित भी करती है। कहते भी हैं, यार, मैं ना फलाना या फलानी जैसा बनना चाहता हूँ या चाहती हूँ। इसे ही कहते हैं अटकना। अध्यात्म हो या कुछ और, हर क्षेत्र में तुलना (कम्पैरिज़न) करके लोग एक दूसरे को आदर्श बनाते हैं, ये हमारे इस क्षेत्र में आदर्श हैं या आइडल हैं।

सोचने का विषय यहाँ यह है कि हर क्षेत्र अपने आप में विशालता को लिए हुए है। उसमें इतनी गहराई है कि उस गहराई को मापना इतना आसान तो नहीं है! अगर किसी क्षेत्र में किसी ने अपना 70% एचीवमेंट किया हो, तो आप यदि उसको फॉलो करेंगे तो 70% ही रह जायेंगे ना। और वो भी 70% में कौन सा पहलू है, जिसमें उसे महारत हासिल है, यह भी तो देखना है। आप यदि उसी बात को लेकर आगे बढ़ेंगे तो बाकी रह जायेगा। उदाहरण, कोई बहुत अच्छा वक्ता है, लेकिन वक्ता भी कैसा, किसी विशेष विषय का है, या एंकरिंग या उद्घोषणा अच्छी कर लेता है, यही ना! आपने ये तो देखा ही नहीं, वक्ता में किस क्षेत्र की पकड़ है, बस उसे अपना आदर्श बना लिया। बाकी सारे पहलू छूट गए। अगर कोई हीरो बने तो उसे अपने हर एक फील्ड पर काम करना होगा तभी परफेक्ट एक्टर होगा वो। हमें अध्यात्म में पूरे विश्व का यदि हीरो बनना हो, तो आप सोचो कितनी बारीकी से पार्ट प्ले करना होगा! अगर इसमें आपने किसी को भी अपना कुछ भी बनाया तो अटक जायेंगे, उससे नीचे ही रहेंगे, ऊपर नहीं जा सकते। क्योंकि मनुष्य सीमित है, उसे हर समय नाम, मान, शान, सम्मान चाहिए ही चाहिए। अगर उसको चाहिए तो आप भी वैसा ही फॉलो करेंगे ना! और आप इसे गांठ बांध लीजिए, जो कोई इस भाव से कर्म कर रहा है, उसका आकर्षण और बढ़ रहा है। हमारी हर एक गतिविधि जैसी है, उसमें पारदर्शिता दिखाई तब देगी जब वह पुरुषार्थ लोकहित, जनहित में सच्चाई से होगा। अगर आप सच में आध्यात्मिक हैं, परमात्मा के कार्य में हैं, तो आपको किस बात की चिंता, कैसा डर, कैसी फिकर, क्यों जुटाना है, क्यों? आप इसलिए तो परमात्मा से नहीं जुड़े हैं ना! आप तो मुक्त होने के लिए जुड़े हैं ना! फिर बन्धन क्यों महसूस हो रहा है, क्योंकि किसी न किसी को सूक्ष्म में आप फॉलो कर रहे हैं। सोचना अब आपको है, आप जिसको अपना आदर्श मानते हैं, उसमें थोड़ी भी खोट दिखी, आप हिल गए समझ लीजिए। कितने दिन बैठ के सोचेंगे, और फिर सभी को उसी नज़र से देखेंगे भी। और अगर आपने शिकायत के लहज़े में कुछ बोला, तो वहाँ से आपको यह सुनने को मिल सकता है, मैंने कहा था कि आप मुझे अपना आदर्श बनाओ! इसी को देखकर शायद परमात्मा ने एक ऐसे व्यक्तित्व को सारा कार्य भार दिया, जिसने सिर्फ अपने ऊपर कार्य किया और बनाया भी आदर्श तो उसे, जो परफेक्ट है, सर्वदा कल्याणकारी है, और वैसा ही बनते चले गए, विशाल और बेहद की सोच के धनी। वो हैं ब्रह्माकुमारीज़ के फाउण्डर फादर ब्रह्मा बाबा। वे एक सेम्पल हैं कि यदि किसी को अपना सब कुछ मानना है तो सिर्फ परमात्मा को मानो, नहीं तो सभी में खोट तो है! वो एक ऐसे आदर्श हैं, जिसमें न्यूट्रल भाव है, अर्थात् सभी के लिए एक जैसे भाव।

और यहाँ तो अच्छे से अच्छा इंसान जिसे आप अपना सबकुछ मानते हैं, वो समस्या या किसी भी परिस्थिति में एकतरफा बर्ताव (बायस) करता है, बदल जाता है। इसलिए मात्र एक सुझाव है कि सिवाय परमात्मा के किसी को भी अपना आदर्श मत बनाइए। हाँ, सबसे आप थोड़ा बहुत सीख ले सकते, गुण, विशेषता ले सकते हैं, लेकिन वही सबकुछ हैं, यह एक धोखा है। तो उठो और जागो, सिर्फ परमात्मा के साथ जियो।

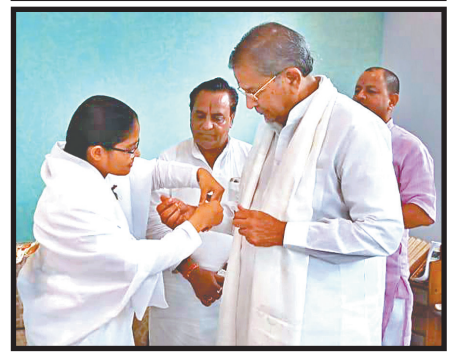

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दे

हम बार बार के विजयी हैं, इस स्मृति को पावरफुल बनायें

मन की बात - राजयोगी

प्रश्न: विजयी बनने के लिए कौन सी मुख्य धारणा की आवश्यकता है?

उत्तर: विजयी बनने के लिए अलर्ट रहने की आवश्यकता है। एक होते हैं अलर्ट रहने वाले और दूसरे होते हैं अलबेले रहने वाले। जो सदा अलर्ट होते हैं, वे कभी माया से धोखा नहीं खायेंगे, बल्कि वो सदा विजयी ही होंगे। उन्हें ये हर पल याद रहेगा कि विजय तो मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। वो जैसे कि उनके मन और चित्त में समाया हुआ होगा।

प्रश्न: कई पूछते हैं कि एक सौ आठ की माला और सोलह हज़ार की माला में आने वालों के चिन्ह व निशानियां क्या होंगी?

उत्तर: जो यहां सदा विजयी रहते हैं वो ही विजयी माला में आयेंगे। इसलिए वैजयंती माला का नाम पड़ा है। जो कभी कभी विजयी हैं वे सोलह हज़ार की माला में आयेंगे। विजयी माला वालों की निशानी होगी कि वे जो संकल्प करेंगे वो सिद्ध होगा। पर जिनको कभी सिद्धि मिलेगी कभी नहीं, कभी सफल होंगे कभी नहीं, वे सोलह हज़ार की माला में आयेंगे। होंगे दोनों ही बाप के प्यारे, परंतु परमात्मा की शक्ति से विधिपूर्वक सिद्धि को अर्जित न कर पाने के कारण वे दूसरे नम्बर में आ जाते हैं।

प्रश्न: कौन सा लक्ष्य रखने से सदा विजयी बन सकते हैं।

उत्तर: उसे सदा स्मृति में रहता है कि हम अभी के विजयी नहीं, कल्प कल्प, अनेक बार के विजयी हैं। जो बात अनेक बार की जाती है तो वो स्वभाव संस्कार में स्वतः ही आ जाती है। जैसे आज की दुनिया में जो बात नहीं करनी चाहिए, लेकिन वो कर लेते हैं, तो कह देते हैं कि यह तो मेरा संस्कार बन गया है। तो यहां भी अनेक बार के विजयी होने की स्मृति विजय का संस्कार बना देगी।

प्रश्न: व्यर्थ को समर्थ बनाने की तेज़ मशीनरी कौन सी होनी चाहिए?

उत्तर: जैसे कोई भी चीज़ की मशीनरी पावरफुल होती है, तो काम तेज़ी से होता है, तो यहां भी व्यर्थ संकल्प को समर्थ करने के लिए बुद्धि रूपी मशीनरी पावरफुल हो। बुद्धि भी पावरफुल तब होगी जब बुद्धि का पावर हाउस से कनेक्शन होगा। यहां कनेक्शन टूटता तो नहीं, लेकिन लूज़ ज़रूर हो जाता है। अतः अब वो भी लूज़ नहीं होना चाहिए, तभी व्यर्थ को समर्थ बना सकेंगे। उसके लिए परमात्मा जो ज्ञान सुनाते हैं, उसका मनन चिंतन करने की आदत बनानी चाहिए। उसे समझपूर्वक चिंतन के साथ चित्त पर लाना चाहिए। तभी हम व्यर्थ को समर्थ में बदल सकते हैं।

प्रश्न: ब्राह्मण जीवन का मुख्य कर्त्तव्य क्या है?

उत्तर: परमात्मा की याद के सदा स्मृति स्वरूप होकर रहना। जैसे मिश्री मिठास का रूप होती है, वैसे ही याद स्वरूप ऐसे हो जाओ कि याद अलग ही न हो सके। अगर परमात्मा की याद छोड़ी तो बाकी रहा ही क्या! जैसे शरीर से आत्मा निकल जाये तो मुर्दा ही तो कहेंगे। वैसे ही यदि ब्राह्मण जीवन से परमात्म याद निकल जाये तो ब्राह्मण जीवन क्या हुआ! तो ब्राह्मण जीवन का कर्त्तव्य है याद स्वरूप बनना। यदि याद नहीं, तो हम ब्राह्मण ही नहीं। जब ब्राह्मण ही नहीं, तो जीवन साधारण हो गई ना। तो हम ब्राह्मण तभी कहला सकते, जब परमात्मा की याद हमारे से अलग ना हो।

प्रश्न: विश्व कल्याणकारी कब बन सकते हैं?

उत्तर: कल्याण तब कर सकेंगे जब स्वयं में सम्पन्न होंगे। जब स्वयं सम्पन्न नहीं होंगे तो विश्व कल्याण नहीं कर सकेंगे। इसलिए सदा बेहद की दृष्टि रखनी चाहिए। बेहद की सेवार्थ जब बेहद का नशा होगा, तब बेहद का राज्य प्राप्त कर सकेंगे। सफलता अर्थात् सदा हर्षित रहना और सभी को हर्षितमुख बनाना। परमात्मा और सेवा के सिवाय और कोई बात उसकी स्मृति में नहीं होगी। वे सदा परमात्मा की याद के तार से जुड़े होंगे, तब ही विश्व कल्याणकारी बन सकते हैं। उन्हें सदा ये स्वमान रहेगा कि मैं विश्व कल्याणकारी परमात्मा की सहयोगी विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

नोएडा-उ.प्र.। संस्कृति एवं परिवहन राज्यमंत्री डॉ. महेश शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रेनू। साथ हैं ब्र.कु. दीपक।

जयपुर-वैशाली नगर। विधायक घनश्याम तिवारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. एकता।

आस्का-ओडिशा। विधायक देबराज मोहंती को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रवाती।

शिकोहाबाद-उ.प्र.। एस.पी. महेन्द्र कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।

मिरज़ापुर-उ.प्र.। एस.पी. आशीष तिवारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिन्दु।

जौनपुर-उ.प्र.। प्रो. घनश्याम ओझा,प्राचार्य,राज डिग्री कॉलेज,जौनपुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अंजलि,वाराणसी तथा ब्र.कु. कविता।

पानीपत-हरियाणा। शिक्षक दिवस पर ज्ञान मानसरोवर में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. श्रेयंश द्वेवेदी,वाइस चांसलर,संस्कृत युनिवर्सिटी,कैथल, ब्र.कु. सरला, सुमेधा कटारिया,आई.ए.एस.,डी.सी., ब्र.कु. भारत भूषण तथा डॉ. प्रकाश मिश्रा।

जगन्नाथ पुरी-ओडिशा। 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' के तहत जगन्नाथ मंदिर में सफाई करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ बारिपदा सेवाकेन्द्र के भाई बहनें।

देसुरी-राज.। नये एस.डी.एम. हसमुख जी को आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. कविता।